शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०४-२०२२

वर्ष ३३ अंक ०१ अप्रैल २०२२ विक्रम संवत् २०७८-७९ पृष्ठ २० मूल्य रु. १०.००

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2022 में पारित प्रस्ताव

भारत को स्वावलम्बी बनाने हेतु कार्यों के अवसर बढ़ाना आवश्यक

धर्म रक्षा न्यास, रायपुर द्वारा आयोजित गोष्ठी - 27 मार्च 2022

राष्ट्र सेविका समिति व बंगाली कालीबाड़ी महिला समिति द्वारा आयोजित - 23 मार्च 2022

चित्र भारती द्वारा आयोजित राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2022 (भोपाल - 25 से 27 मार्च)

सुभाषित

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
सर्पः शाम्यति मन्त्रैश्च दुर्जनः केन शाम्यति॥

अर्थात्– साँप भी क्रूर होता है और दुष्ट भी, किन्तु दुष्ट साँप से अधिक क्रूर होता है क्योंकि साँप के विष का तो मन्त्र से शमन हो सकता है किन्तु दुष्ट के विष का शमन किसी प्रकार से नहीं हो सकता।

संपादकीय

राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध क्यों?

अभी अभी घटित दो बड़ी घटनाओं को देखे जो विवादास्पद व चर्चित हुई। पहली घटना हिजाब की जिसपर कर्नाटक हाईकोर्ट ने निर्णय सुनाया और दूसरी फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स'। इन दोनों घटनाओं में पाएंगे कि देश का जनमत 3/4 व 1/4 में विभाजित है। एक ओर भारत के बड़े हिस्से का जनमत है तो दूसरी ओर आत्मघोषित हिन्दू लिबरल्स की अल्पसंख्या है, जो निरंतर ऐसी घटनाओं का पक्ष रखते हैं जो भारत के राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध होते हैं।

हिजाब के विषय पर अंतिम निर्णय सर्वोच्च न्यायालय को देना है किन्तु समाज के कुछ वर्ग ने पहले से अपना निर्णय सुना दिया है। इस पर जनमत स्पष्ट रूप से 3/4 व 1/4 का दिखाई देता है। जो शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब पहनने के अधिकार का समर्थन करता है, जबकि उस शैक्षणिक संस्थान में छात्रों के लिए ड्रेसकोड है, जो किसी भी धर्म को प्रदर्शित करने वाली वेशभूषा का समर्थन नहीं करता। हिजाब पहनने का समर्थन जो हिन्दू कर रहे हैं वे 5 प्रतिशत भी नहीं होंगे जो स्वयं को लिबरल्स कहते हैं, जबकि वे है नहीं।

अब दूसरी घटना। फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स'। इस फिल्म की सफलता ने बॉलीवुड व फिल्म निर्माताओं को शर्मसार किया है। अनेक वर्षों से बॉलीवुड केवल खूबसूरत (शेष पृष्ठ १२ पर)

ए महिना के तिहार

ए महिना के तिहार मन म नवा साल, वर्ष प्रतिपदा दू तारीक के हवय, इही दिन ले चैत्र नवरात्री सुरु होही। तेकर बाद श्रीराम नवमी दस तारीक के हवय। श्री हनुमान प्रकटोत्सव सोला तारीक के मनाए जाही। महिना के पहिली एकादसी (कामदा) बारा तारीक के अऊ दूसर एकादसी (वरूथिनी) छब्बीस तारीक के परिही।

वर्ष प्रतिपदा (चैत्र नवरात्रि प्रारंभ)	चैत्र शु.01	02 अप्रैल
श्रीराम नवमी	चैत्र शु.09	10 अप्रैल
कामदा एकादशी	चैत्र शु.11	12 अप्रैल
श्री हनुमान प्रकटोत्सव	चैत्र शु.15	16 अप्रैल
वरूथिनी एकादशी	वैशाख कृ.11	26 अप्रैल

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग घनश्यामदास बिड़ला के जयंती दस तारीक के हवय। हमर राष्ट्रगीत के लिखइया बंकिमचंद्र चटर्जी के पुण्यतिथि आठ तारीक, जुन्ना माई मंतरी मोरारजी देसाई के दस तारीक, फणीश्वर नाथ 'रेणु' के ग्यारह तारीक, बड़का इंजीनियर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया के चौदह तारीक, जुन्ना राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के सत्रह तारीक अऊ कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के पुण्यतिथि चौबीस तारीक के घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म सात तारीक के विश्व स्वास्थ्य दिवस, तेरा तारीक के जलियांवाला बाग दिवस, बाईस तारीक के अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस अऊ तेईस तारीक के विश्व पुस्तक दिवस मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार – जय माँ भारती

पूज्य वल्लभाचार्य जयंती
वैशाख कृष्ण एकादशी
(26 अप्रैल 2022)

भिलाई की बेटी ने बढ़ाया मान, प्रधानमंत्री के हाथों मिला सम्मान

भिलाई। भिलाई की एक और बेटी ने भिलाई ही नहीं पूरे छत्तीसगढ़ का नाम रोशन कर दिया। कानून में मास्टर की डिग्री (एलएलएम) में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने पर गुजरात में आयोजित दीक्षांत समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भिलाई की इस बेटी श्रीमई पुहान को गोल्ड मैडल से सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने श्रीमई की प्रतिभा की सराहना की।

भिलाई इस्पात संयंत्र लौह उत्पादन ही नहीं प्रतिभाओं के लिए भी जाना जाता है। यहां के प्रतिभावानों ने देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी अलग पहचान बनाई है। भिलाई में पली बढ़ी और स्कूली शिक्षा प्राप्त करने वाली बेटी श्रीमई ने भी अपने भिलाईवासी होने का मान बढ़ा दिया। पंचशील नगर बी सेक्टर बोरसी निवासी श्रीमई पुहान ने गुजरात के अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय से बीते सत्र में कानून में मास्टर की डिग्री (एलएलएम) प्राप्त की है। गत जुलाई में इसका परिणाम घोषित किया गया था। इसमें श्रीमई ने अपनी प्रतिभा के बल पर पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सम्मिलित हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समारोह में श्रीमई पुहान को गोल्ड मैडल दिया। श्रीमई ने क्राइम एंड सिक्योरिटी लॉ पर एलएलएम की डिग्री प्राप्त की। (शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी को चरित्र में आत्मसात करें

एक राज्य में अकाल पड़ गया। लोग भूखे मर रहे थे, तब वहां के राजा ने प्रजा को रोटियां देना शुरू कर दिया। राजा के महल में लोगों की भीड़ लगने लगी। एक दिन रोटी लेने के लिए एक छोटी लड़की भी महल पहुंची। जब सारे लोग रोटियां लेकर चले गए तब राजा के पास एक ही सबसे छोटी रोटी बची थी। राजा ने वह रोटी उस बच्ची को दे दी।

राजा उस बच्ची के लिए एक रोटी बचाकर रखते थे। एक दिन राजा ने बच्ची को रोटी दी और बच्ची अपने घर पहुंची। घर पहुंचकर उसकी मां ने रोटी देखी तो उसमें एक मूल्यवान रत्न था। मां ने अपनी बच्ची से कहां कि बेटी ये रत्न राजा को वापस करके आ जाओ। शायद यह गलती से रोटी में लगकर हमारे पास आ गया है। छोटी बच्ची तुरंत ही राजमहल पहुंच गई। सैनिकों ने राजा को बताया कि एक छोटी बच्ची आपसे मिलना चाहती है। राजा उस बच्ची के पास पहुंचे। बच्ची ने राजा से कहा कि 'आपने जो रोटी मुझे दी थी, उसमें ये रत्न भी आ गया था। मैं आपको यह रत्न वापस करने आयी हूं।' राजा बच्ची की ईमानदारी से बहुत खुश हुआ और उसे अपने महल में ही रहने के लिए स्थान दे दिया। उस बच्ची और उसकी मां के लिए भोजन आदि की व्यवस्था की। बच्ची की पढ़ाई की भी व्यवस्था राजा ने कर दी। बड़ी होकर वही लड़की राजा की उत्तराधिकारी भी बनी। ईमानदारी एक ऐसा गुण है, जो किसी भी व्यक्ति को सबसे अलग खड़ा करता है। ईमानदारी को अपने चरित्र में आत्मसात करें।

कर्णावती में हुई प्रतिनिधि सभा में संघ ने किया प्रस्ताव पारित

भारत को स्वावलम्बी बनाने हेतु कार्यों के अवसर बढ़ाना आवश्यक

रायपुर। कोरोना महामारी के बाद रोजगार और आजीविका पर उसके दुष्प्रभाव से उभरने के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए समूचे समाज को अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी। इस आशय का प्रस्ताव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में पारित किया गया, जिसे छत्तीसगढ़ प्रांत के संघचालक डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना ने पत्रकारों को अवगत कराया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय कार्यालय जागृति मंडल में बुधवार 16 मार्च को प्रेस वार्ता में डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना ने कहा कि, अ.भा.प्र.स. संघ कार्य की निर्णय करने वाली सर्वोच्च सभा है जो प्रति वर्ष आयोजित होती है। इस प्रतिनिधि सभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसका शीर्षक है 'भारत को स्वावलम्बी बनाने हेतु कार्यों के अवसर बढ़ाना आवश्यक'। इस प्रस्ताव का वाचन छत्तीसगढ़ के प्रान्त प्रचार प्रमुख कनिराम ने किया।

प्रस्ताव में इस बात पर बल दिया गया है कि मानव केन्द्रित, पर्यावरण के अनुकूल, श्रम प्रधान तथा विकेंद्रीकरण एवं लाभांश का न्यायसंगत वितरण करने वाले भारतीय आर्थिक प्रतिमान (मॉडल) को महत्व दिया जाना चाहिए, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग और कृषि आधारित उद्योगों को संवर्धित करता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (अ.भा.प्र.स.) गुजरात के कर्णावती में गत 11 से 13 मार्च 2022 को सम्पन्न हुई है। सम्पूर्ण देशभर से कुल 1211 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें छत्तीसगढ़ प्रान्त से 30 प्रतिनिधि थे।

अ.भा.प्र.स. में एक प्रस्ताव पारित हुआ तथा संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी के द्वारा

एक वक्तव्य जारी किया गया जिसमें 'स्वाधीनता का अमृत महोत्सव- स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर' के तत्वावधान में सम्पूर्ण देश भर में सम्पन्न हो रहे कार्यक्रमों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ प्रान्त में हो रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। सरकार्यवाह ने अपने वक्तव्य में स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के अवसर पर स्वतंत्रता आंदोलन को राष्ट्र के मूल अधिष्ठान यानि राष्ट्रीय 'स्व' को उजागर करने के लिए निरंतर प्रयास के रूप में देखने को प्रासंगिक बताया।

प्रान्त संघचालक डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना ने बताया कि, इस समय छत्तीसगढ़ प्रान्त में कुल 1031 स्थानों पर 1389 शाखाएं चल रही है। साप्ताहिक मिलन 505 और 307 सेवा बस्तियों में सेवा कार्य संचालित है।

गतिविधि में छत्तीसगढ़ प्रान्त में धर्मजागरण, ग्राम विकास, गौसेवा, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन व पर्यावरण ऐसे 6 गतिविधियों के कार्य चल रहे है।

महाविद्यालयीन कार्य, सामाजिक सद्भाव, किसान कार्य में भी सतत विस्तार हो रहा है।

भारत बोध के विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास करेंगे : दत्तात्रेय होसबाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि भारत के विमर्श को मजबूत करने का, उसे प्रभावी बनाने का कार्य आने वाले वर्षों में विशेष प्रयास करते हुए करने का निर्णय किया है। सरकार्यवाह जी कर्णावती में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक के अंतिम दिन (13 मार्च, रविवार) प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत के हिन्दू समाज, संस्कृति, इतिहास, यहां की जीवन पद्धति के बारे में एक सही चित्र को समाज के सम्मुख रखना चाहिए। भारत में और विदेशों में भी भारत के बारे में अज्ञानता के कारण या जानबूझकर भ्रांतियां फैलाने का षड्यंत्र लंबे समय से चल रहा है। इस वैचारिक विमर्श को बदलकर तथ्यों पर आधारित भारत बोध के सही विमर्श को आगे बढ़ाना है। समाज में बहुत सारे लोग इस विषय पर कार्य कर रहे हैं, शोध किया है, पुस्तकें लिखी हैं। विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए उनके साथ भी समन्वय-सहयोग किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि संघ का शताब्दी वर्ष समीप आ रहा है। हर तीन वर्ष में संघ कार्य के विस्तार (भौगोलिक व संघ कार्य के आयामों का) को लेकर योजना बनाते हैं, उस लक्ष्य को लेकर आगे चलते हैं। और हर वर्ष दो बार (कार्यकारी मंडल, प्रतिनिधि सभा) उसकी समीक्षा करते हैं। अभी देशभर में 50 प्रतिशत मंडलों में संघ कार्य पहुंचा है, आने वाले दो वर्ष में सभी मंडलों में कार्य पहुंचाने का लक्ष्य रखा है व योजना भी बनी है। शहरी क्षेत्रों में 45 प्रतिशत बस्तियों में संघ कार्य है, दो वर्षों में इसे भी सभी बस्तियों में ले जाने का लक्ष्य व योजना है।

सरकार्यवाह जी ने कहा कि संघ कार्य बढ़ाने का उद्देश्य संख्यात्मक आंकड़ों या गर्व के लिए नहीं है। संघ के स्वयंसेवक हर बस्ती-मंडल में हैं यानि राष्ट्रीयता, राष्ट्र भावना को आगे बढ़ाने वाला एक व्यक्ति है। जो समाज के संकट के समय संवेदना से समाज के सब लोगों को जोड़ने वाला व्यक्ति होता है। इसलिए संघ की अपने संगठन की ताकत बढ़ाना यह हमारा उद्देश्य नहीं है, समाज की आंतरिक शक्ति बढ़नी चाहिए। सामाजिक एकता, समरसता, संगठन भाव बढ़ाना है। इसलिए संघ की शाखा है। इसी भावना को समझते हुए समाज ने सहयोग किया है, व स्वीकार किया है।

स्वयंसेवक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। स्वयंसेवकों की पहल से समाज की सज्जन शक्ति के सहयोग से समाज परिवर्तन के कार्य को परिणामकारी ढंग से आगे बढ़ाया है। हम रेस में आगे नहीं रहना चाहते, सभी लोग मिलकर तालमेल के साथ कार्य करें। इसलिए केवल संगठन की रचना में नहीं कर रहे। समाज परिवर्तन के कार्य को समाज का आंदोलन बनाना चाहते हैं। हम देश के हर जिले में एक गांव को आदर्श गांव बनाना चाहते हैं। अभी देश में 400 गांव प्रभात गांव हैं, जहां कुछ परिवर्तन दिखता है। ऐसे ही परिवार प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, गौ सेवा-संवर्धन के क्षेत्र में स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा का पारित प्रस्ताव –

भारत को स्वावलम्बी बनाने हेतु कार्यों के अवसर बढ़ाना आवश्यक

प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, मानवशक्ति की विपुलता और अंतर्निहित उद्यमकौशल के चलते भारत अपने कृषि, विनिर्माण, और सेवा क्षेत्रों को परिवर्तित करते हुए कार्य के पर्याप्त अवसर उत्पन्न कर अर्थव्यवस्था को उच्च स्तर पर ले जाने की क्षमता रखता है। विगत कोविड महामारी के कालखंड में जहाँ हमने रोजगार तथा आजीविका पर उसके प्रभावों का अनुभव किया है, वहीं अनेक नए अवसरों को उभरते हुए भी देखा है, जिनका समाज के कुछ घटकों ने लाभ उठाया है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (अ.भा.प्र. सभा) इस बात पर बल देना चाहती है कि रोजगार की इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने हेतु समूचे समाज को ऐसे अवसरों का लाभ उठाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

अ.भा.प्र.सभा का मत है कि मानव केंद्रित, पर्यावरण के अनुकूल, श्रम प्रधान तथा विकेंद्रीकरण एवं लाभांश का न्यायसंगत वितरण करने वाले भारतीय आर्थिक प्रतिमान (मॉडल) को महत्त्व दिया जाना चाहिए, जो ग्रामीण अर्थव्यवथा, सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग और कृषि आधारित उद्योगों को संवर्धित करता है। ग्रामीण रोजगार, असंगठित क्षेत्र एवं महिलाओं के रोजगार और अर्थव्यवस्था में उनकी समग्र भागीदारी जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देना चाहिए। हमारी सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप नई तकनीकी तथा सॉफ्ट स्किल्स को अंगीकार करने के प्रयास करना अनिवार्य है।

यह उल्लेखनीय है कि देश के प्रत्येक भाग में उपर्युक्त दिशा पर आधारित रोजगार सृजन के अनेक सफल उदाहरण उपलब्ध हैं। इन प्रयासों में स्थानीय विशेषताओं, प्रतिभाओं और आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा गया है। ऐसे अनेक स्थानों पर उद्यमियों, व्यवसायियों, सूक्ष्म वित्त संस्थानों, स्वयं

सहायता समूहों और स्वैच्छिक संगठनों ने मूल्यवर्धित उत्पादों, सहकारिता, स्थानीय उत्पादों के प्रत्यक्ष विपणन और कौशल विकास आदि के क्षेत्रों में प्रयास प्रारंभ किए हैं। इन प्रयासों ने हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, घरेलू उत्पादों तथा पारिवारिक उद्यमों जैसे व्यवसायों को बढ़ावा दिया है। उन सभी अनुभवों को परस्पर साझा करते हुए जहाँ आवश्यकता है वहाँ, उन्हें दोहराने के बारे में विचार किया जा सकता है। कुछ शैक्षिक व औद्योगिक संस्थानों ने रोजगार सृजन के कार्य में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अ.भा.प्र.सभा दुर्बल एवं वंचित घटकों सहित समाज के बड़े भाग को स्थायी रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम यशोगाथाओं की सराहना करती है। समाज में 'स्वदेशी और स्वावलम्बन' की भावना उत्पन्न करने के प्रयासों से उपर्युक्त पहलों को प्रोत्साहन मिलेगा।

उच्च रोजगार क्षमता वाले हमारे विनिर्माण क्षेत्र को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, जो आयात पर हमारी निर्भरता भी कम कर सकता है। शिक्षा और परामर्श द्वारा समाज, विशेषकर युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहन देने वाला वातावरण देना चाहिए, ताकि वे केवल नौकरी पाने की मानसिकता से बाहर आ सकें। इसी प्रकार की उद्यमशीलता की भावना को

महिलाओं, ग्रामीणों, दूरस्थ और जनजातीय क्षेत्रों में भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। शिक्षाविद्, उद्योग जगत के पुरोधा, सामाजिक नेतृत्व, समाज संगठन तथा विविध संस्थान इस दिशा में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं और उसके लिए यह आवश्यक है कि सरकारी तथा अन्य प्रयास इनके साथ मिलकर चलें।

अ.भा.प्र.सभा अनुभव करती है कि तीव्रता से बदलती आर्थिक तथा तकनीकी परिदृश्य की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें सामाजिक स्तर पर नवोन्मेषी पद्धतियाँ ढूँढनी होंगी। उभरती डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं निर्यात की सम्भावनाओं से उत्पन्न रोजगार और उद्यमिता के अवसरों का गहन अन्वेषण किया जाना चाहिए रोजगार के पूर्व और दौरान मानवशक्ति के प्रशिक्षण, अनुसन्धान तथा तकनीकी नवाचार, स्टार्ट अप और हरित तकनीकी उपक्रमों आदि के प्रोत्साहन में हमें सहभागी होना चाहिए।

अ.भा.प्र.सभा भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए धारणक्षम एवं समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु नागरिकों से रोजगार सृजन के भारत केंद्रित प्रतिमान (मॉडल) पर काम करने का आवाहन करती है। अ.भा.प्र.सभा समाज के सभी घटकों का आवाहन करती है कि विविध प्रकार के कार्य के अवसरों को बढ़ाते हुए हमारे शाश्वत मूल्यों पर आधारित एक स्वस्थ कार्य संस्कृति को प्रस्थापित करें, जिससे भारत वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर पुनः अपना उचित स्थान अंकित कर सके।

विश्वसनीय व सुरक्षित इंटरनेट देने के लिए भारत सरकार ने अब तक 320 मोबाइल एप ब्लॉक किए

नई दिल्ली। विश्वसनीय, सुरक्षित और जवाबदेह इंटरनेट देने के लिए देश में अब तक 320 मोबाइल एप ब्लॉक किए गए हैं। वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री सोम प्रकाश ने लोकसभा में बुधवार, 23 मार्च को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया, देश की संप्रभुता, अखंडता, रक्षा और सुरक्षा को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। फरवरी में 49 एप को फिर से ब्लॉक किया गया है जिन्हें रिब्रांडिंग कर दोबारा लॉन्च किया गया। एक अन्य उत्तर में उन्होंने बताया, अप्रैल 2020 से दिसंबर 2021 के बीच अमेरिका से 2.45 अरब डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आया। देश में आने वाले कुल एफडीआई में महज 0.43% हिस्सेदारी के साथ चीन 20वें नंबर पर है।

सोमप्रकाश ने एक अन्य जवाब में बताया, चालू वित्त वर्ष 2021-22 में 28,091 पेटेंट दिए गए हैं। बीते वित्त वर्ष 2020-21 में 28,391 किपेटेंट दिए गए थे। ज्ञात हो कि, भारत सरकार लगातार विश्वसनीय व सुरक्षित इंटरनेट देने के लिए सतत प्रयत्नशील है। इस पर गंभीरता से कार्य किया जा रहा है।

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव - स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर

भारत इस वर्ष स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है। यह अवसर शताब्दियों से चले ऐतिहासिक स्वतंत्रता संग्राम का प्रतिफल और हमारे वीर सेनानियों के त्याग एवं समर्पण का उज्ज्वल प्रतीक है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की सबसे बड़ी विशेषता थी कि यह केवल राजनैतिक नहीं, अपितु राष्ट्र जीवन के सभी आयामों तथा समाज के सभी वर्गों के सहभाग से हुआ सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन था। इस स्वतंत्रता आन्दोलन को राष्ट्र के मूल अधिष्ठान यानि राष्ट्रीय 'स्व' को उजागर करने के निरंतर प्रयास के रूप में देखना प्रासंगिक होगा।

इस उपनिवेशवादी आक्रमण का व्यापारिक हितों के साथ भारत को राजनैतिक साम्राज्यवादी और धार्मिक रूप से गुलाम बनाने का निश्चित उद्देश्य था। अंग्रेजों ने भारतीयों के एकत्व की मूल भावना पर आघात करके मातृभूमि के साथ उनके भावनात्मक एवं आध्यात्मिक संबंधों को दुर्बल करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने हमारी स्वदेशी अर्थव्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था, आस्था-विश्वास और शिक्षा प्रणाली पर प्रहार कर स्व-आधारित तंत्र को सदा के लिए विनष्ट करने का भी प्रयास किया।

यह राष्ट्रीय आन्दोलन सार्वदेशिक और सर्वसमावेशी था। स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद आदि आध्यात्मिक नेतृत्व ने देश के जन और जननायकों को ब्रिटिश अधिसत्ता के विरुद्ध सुदीर्घ प्रतिरोध हेतु प्रेरित किया। इस आन्दोलन से महिलाओं, जनजातीय समाज तथा कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान सहित राष्ट्र जीवन के सभी आयामों में स्वाधीनता की चेतना जागृत हुई। लाल-बाल-पाल, महात्मा गांधी, वीर सावरकर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, वेळू नाचियार, रानी गाईडिन्ल्यू आदि ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों ने आत्मसम्मान और राष्ट्र भाव की भावना को और प्रबल किया। प्रखर देशभक्त डॉ. हेडगेवार के नेतृत्व में स्वयंसेवको ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया। भारतीय समाज को एक राष्ट्र के रूप में सूत्रबद्ध रखने और राष्ट्र को भविष्य के संकटों से सुरक्षित रखने के लिए 'स्व' पर आधारित जीवनदृष्टि को दृढ संकल्प के साथ पुन: स्थापित करना आवश्यक है। स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ हमें इस दिशा में पूर्ण प्रतिबद्ध होने का अवसर उपलब्ध कराती है। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के अवसर पर हमें अपने 'स्व' के पुनरानुसंधान का संकल्प लेना चाहिए, जो हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और राष्ट्रीय एकात्मता की भावना को परिपुष्ट करने का अवसर उपलब्ध कराता है।

(पृष्ठ २ का शेष)

श्रीमई पुहान शुरू से ही प्रतिभावान रहीं

भिलाई इस्पात संयंत्र के महाप्रबंधक (मानव संसाधन विभाग) से सेवानिवृत एफएम पुहान एवं संयंत्र के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित भिलाई विद्यालय की लेक्चरर अनुराधा पुहान की सुपुत्री श्रीमई ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल भिलाई में पूरी की। इसके पश्चात् बीए एलएलबी की पढ़ाई राजस्थान में की। वर्तमान में श्रीमई जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में सेवा दे रही हैं। श्रीमई शुरू से ही प्रतिभावान रही है और वह कानून के क्षेत्र को ही अपना लक्ष्य मानते हुए आगे बढ़ी। (साभार-नईदुनिया)

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर मातृशक्ति ने किया पूर्ण वन्दे मातरम् का गायन

राष्ट्र सेविका समिति व बंगाली कालीबाड़ी महिला समिति के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न समाज की महिलाओं द्वारा सम्पूर्ण वंदे मातरम् के गायन का कार्यक्रम रविन्द्र मंच कालीबाड़ी में दिनांक 23 मार्च बलिदान दिवस पर आयोजित किया गया।

इससे पूर्व 20 मार्च से 22 मार्च तक वन्दे मातरम् पर कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें सहभागी बहनों को वन्दे मातरम् का अर्थ बताया गया तथा उसे लय, सुर में तथा समूह में गाने का अभ्यास किया गया। कामकाजी महिला हो या गृहणी सभी ने इस कार्यक्रम में अपनी विशेष रूचि दिखाई। स्वतंत्रता आंदोलन के समय वन्दे मातरम् किस प्रकार क्रांतिकारियों के रग रग में राष्ट्र भक्ति का संचार करने वाला बीज मंत्र था, इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति इस कार्यक्रम में सहभागी हुई बहनों ने की। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ छत्तीसगढ़ प्रान्त के माननीय प्रान्त संघचालक डॉ. पूर्णेदु सक्सेना जी तथा बंगाली समाज के अध्यक्ष श्री तन्मय चटर्जी जी थे। विशेष अतिथि के रूप में शदाणी दरबार के प्रमुख श्री युद्धिष्ठिर लाल जी गरिमामयी उपस्थिति थी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्र सेविका समिति छत्तीसगढ़ प्रान्त की प्रान्त प्रचारिका सुश्री प्राची पाटिल जी थी, जिनका सारगर्भित उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी ऐसी दुर्गा काली के रूप में भारत माता की पुत्रियों ने अपने बलिदान से माँ को स्वतंत्रता प्रदान की हैं। अतुलनीय, अविश्वासनीय, अलौकिक अचंभीत करने वाले उन सभी के तेज प्रताप को हम नमन करते हैं। स्त्री चाहे वह माता हो, पत्नी हो, पुत्री हो या बहन हो अपने हर कर्तव्य का पालन करते हुए उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में सहभागी रही। चाफेकर बंधूओं की माताजी जैसी अन्य सभी क्रांतिकारियों की माताएं जिन्होंने अपने पुत्रों को स्वाभिमान से राष्ट्र की बलिवेदी पर चढते देखा। तिलेश्वरी बरुआ, वीणा दास जैसी अनेको क्रांतिकारी माता पिता की क्रांतिकारी पुत्रियां जिनके बलिदान आज हमें पुत्री धर्म का आवाहन कर रही हैं। कल्याणी देवी, रोहिणी परगनिहा, येसू वहिनी (भाभी), यमुना बाई जैसी वीर पत्नियाँ जिन्होंने अपने पति के स्वतंत्रता के मार्ग पर चल रहें कदम को कभी भी पीछे हटने नहीं दिया बल्कि अपनी ओर से क्रांतिकारी कार्य कर के सप्तपदी के वचन को दृढता से निभाया।

रा. स्व. संघ के प्रांत संघचालक डॉ पूर्णेन्दु सक्सेना जी ने अपने संबोधन में कहा– 'वंदे मातरम् गायन का जो भाव है वह भारत के स्वत्व का भाव है। स्वाधीनता का 75 वां वर्ष यह केवल एक संख्या नहीं है। इस कार्यक्रम के पीछे एक अभिप्राय है। भारत का स्वतंत्रता आंदोलन यह विश्व में एक अनूठा आंदोलन था। भारत ने एक बड़े मानवता का उद्धार इस आंदोलन से किया।' उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'महिलाएं चाहे घर पर हो या कार्यालय में वे कितनी व्यस्त होती है यह हम जानते है लेकिन अपने व्यस्त समय में भी वन्दे मातरम् को सुस्वर कंठस्थ करना बहुत ही सराहनीय प्रयास है।'

इस कार्यक्रम में सहभागी संस्था बंगाली कालीबाडी महिला समिति, प्रजापति समाज, योगीराज विद्यालय, कमलादेवी संगीत महाविद्यालय, गायत्री प्रज्ञा पीठ, आराधना भजनी मंडल (चौबे कॉलोनी), शौर्य संगीत क्लास, स्वरधूनी मंडल, संस्कार भारती, शबरी कन्या छात्रावास कल्याण आश्रम, माँ शारदा भजनी मंडल जैसे विविध संगठनों की 200 महिला कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और राष्ट्र सेविका समिति की शाखाओं की बहनों ने संपूर्ण योजना व्यवस्था कर के कार्यक्रम को सफल बनाया।

हिन्दू एकजुट हुआ तो देश मजबूत होगा : शरद गजानन ढोले

रायपुर। धर्म रक्षा न्यास ने जनसंख्या असंतुलन, चुनौतियां एवं हमारी भूमिका विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता शरद गजानन ढोले ने कहा कि भारत कमजोर हुआ तो दुनिया पर खतरा बढ़ेगा और भारत कमजोर तब होगा जब हिंदुओं की संख्या का अनुपात कम होगा। हिन्दू समाज की एकजुटता से ही भारत मजबूत होगा। भारत की समस्या का समाधान हिन्दुओं की एकजुटता है।

रविवार, 27 मार्च 2022 को महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज के सभागार में धर्म रक्षा न्यास, रायपुर द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। जनसंख्या असंतुलन, चुनौतियां एवं हमारी भूमिका विषय पर अपना विचार रखते हुए शरद गजानन ढोले (अ. भा. प्रमुख, धर्म जागरण समन्वय) ने कहा कि हिन्दू समाज एक ही है, अंग्रेजों ने और उसके बाद स्वतंत्र भारत में ईसाई मिशनरियों ने समाज को तोड़ने के प्रयास किए। अभी भी भारत में जातिगत भेदभाव दिखाई देता है, इससे हिन्दू समाज कमजोर होता है। इस कमजोरी का लाभ उठाकर धर्मांतरण को बढ़ावा दिया जाता है। 'हिन्दू घटा देश बटा' इसे बताते हुए मुख्यवक्ता शरद ढोले ने हिन्दू समाज के धर्मांतरण और अवैध घुसपैठ को देश में जनसंख्या असंतुलन का सबसे बड़ा कारण बताया। इस गोष्ठी में मंच पर पूज्य संत श्री शिवरूपानंद, पूज्य संत श्री परमात्मानंद, पूज्य महंत श्री वेदप्रकाश, पूज्य श्री अंशुदेव आचार्य, बहन अदिति दीदी, ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय वि. वि., शरद गजानन ढोले, पद्मश्री डॉ. भारती बंधु, डॉ. पूर्णेन्दु सक्सेना, श्री महेश बिड़ला, दीपक चौबे, श्रीमती ममता साहू, व्यास देव भोई, राजकुमार प्रजापति, चेतन तरवानी उपस्थित थे। उन्होंने धर्मांतरण रोकने के लिए बस्तियों में जागरूकता लाना, जहां धर्मांतरण की आशंका है, ऐसी बस्तियों में सजग होकर संपर्क रखना होगा। देश के अनेक राज्यों में धर्म स्वातंत्र्य कानून लागू है किन्तु न तो जनता को और न ही अधिकारियों को इस कानून की जानकारी है। हमें इसकी जानकारी अपने समाज में देनी होगी, जिससे धर्मांतरण के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया जा सके।

भारत में प्रति दस वर्ष में हुए जनगणना के आंकड़े यह बताते है कि, देश में धार्मिक अनुपात में हिन्दुओं की संख्या कम हुई है। जहां जहां हिन्दुओं की संख्या कम हुई, वहां समस्या बढ़ी है, हिन्दुओं पर अत्याचार हुए, देश के कई प्रान्तों में इसके उदाहरण देखने को मिलते है। जो स्थान हिन्दू बाहुल्य है, वहां शांति है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी यह आवश्यक हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध नागरिकों की जिज्ञासा के लिए प्रश्न आमंत्रित किये गए थे। मुख्य वक्ता ने सबके प्रश्नों के उत्तर देकर सबका समाधान किया। बड़ी संख्या में गोष्ठी में उपस्थित प्रबुद्धजनों में से 187 लोगों ने गोष्ठी को लेकर अपना लिखित अभिमत भी दिया है।

हमें विदेशी मानसिकता की गुलामी से बाहर निकलना होगा : शांता अक्का

राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधि मण्डल की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक सम्पन्न

राष्ट्र सेविका समिति द्वारा संचालित संवर्धिनी न्यास की वेबसाइट का हुआ विमोचन

जयपुर। राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधि मण्डल की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 25, 26, 27 मार्च 2022 को श्री अग्रसेन छात्रावास, अग्रवाल महाविद्यालय परिसर, आगरा रोड, जयपुर में समिति की प्रमुख संचालिका शांता अक्का की उपस्थिति में संपन्न हुई। बैठक के उद्घाटन सत्र में प्रमुख कार्यवाहिका सीता अन्नदानम ने देश के कार्य की स्थिति एवं कुछ सामाजिक प्रश्नों के बारे में प्रतिनिधियों को अवगत कराया। सभी प्रतिनिधियों ने अपने प्रांतों के कार्यों का वृत्त प्रस्तुत किया।

बैठक के एक सत्र में आगामी प्रशिक्षण वर्गों के बारे में चिंतन हुआ और योजना बनाई गई। अन्य सत्र में महिला विषयों पर भी चर्चा हुई। चर्चा में ऐसी समस्याओं पर समिति की राय क्या रहेगी और समस्याओं का समाधान कैसे होगा इसका निर्णय लिया गया।

कार्य दृढ़ीकरण की दृष्टि से गटश: चर्चा के बाद आगामी वर्ष के लिए कार्य विस्तार की योजना बनाई गई। राष्ट्र सेविका समिति द्वारा संचालित संवर्धिनी न्यास की वेबसाइट का विमोचन प्रमुख संचालिका शांता अक्का द्वारा किया गया।

समापन सत्र में प्रमुख संचालिका ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि आज हम 75वां स्वतंत्रता महोत्सव मना रहे हैं, फिर भी हम 'स्व'तन्त्र हुए हैं क्या ? आज हम शासकीय दृष्टि से स्वतंत्र हुए हैं, परंतु विदेशी मानसिकता की गुलामी से बाहर नहीं निकल पा रहे, जिसके कारण आज हमारे सामने अनेक सामाजिक प्रश्न खड़े हुए हैं। हम व्यक्तिगत एवं पारिवारिक प्रयासों से हिन्दू जीवन मूल्यों का संरक्षण करें। इन जीवन मूल्यों का रक्षण एवं अपने सामने आने वाले सभी सामाजिक प्रश्नों का उत्तर हम नियमित शाखाओं के माध्यम से ही दे सकते हैं।

राष्ट्र सेविका समिति - प्रशिक्षण वर्ग - 2022

प्रारंभिक शिक्षा वर्ग - 2022			वर्ग शुल्क - 200 रुपये
स्थान : रायपुर	**स्थान – चन्द्रपुर**	**स्थान – दुर्ग**	**स्थान – बस्तर**
अवधि –	अवधि –	अवधि –	अवधि –
19 अप्रैल से	23 अप्रैल से	25 अप्रैल से	25 अप्रैल से
24 अप्रैल	29 अप्रैल	30 अप्रैल	30 अप्रैल

प्रवेश वर्ग (प्रथम वर्ष) मई 2022 में होगा।

पूर्वोत्तर में बड़ी पहल - छह स्थानों पर सीमा विवाद समाप्त होगा

असम और मेघालय के बीच चल रहा 50 वर्ष पुराना सीमा विवाद सुलझा

असम और मेघालय ने मंगलवार, 29 मार्च को 12 में से छह स्थानों पर सीमा विवाद को सुलझाने के समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह विवाद 50 साल पुराना था। इस करार के साथ ही पांच दशक से चला आ रहा सीमा विवाद सुलझ गया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इसे पूर्वोत्तर के लिए 'ऐतिहासिक दिन' बताया है।

समझौते पर अमित शाह के साथ असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा और मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड संगमा की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। दोनों राज्यों के बीच 884.9 किमी की सीमा के साथ 12 में से 6 स्थानों पर चले आ रहे विवाद को समाप्त किया जाएगा। इस समझौते से दोनों राज्यों के बीच 70% सीमा विवाद सुलझ गया है। मेघालय को 1972 में असम से अलग राज्य के रूप में बनाया गया था।

36 गांव के 36.79 वर्ग किमी के क्षेत्र में समझौता

यह समझौते में 36 गांव के 36.79 वर्ग किमी का क्षेत्र है। दोनों राज्यों ने बीते वर्ष सीमा विवाद सुलझाने के लिए 3-3 समितियां बनाई थीं। पैनल ने सरमा और संगमा के बीच दो दौर की बातचीत हुई थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संघ शिक्षा वर्ग-2022

प्रथम वर्ष (सामान्य)	प्रथम वर्ष (सामान्य)	द्वितीय वर्ष (सामान्य)	तृतीय वर्ष (सामान्य)
अवधि : 12 मई दोपहर 12.00 बजे से 02 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थान :** सरस्वती शिशु मंदिर, कंगोली, **जगदलपुर** (छ.ग.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 15 मई दोपहर 12.00 बजे से 05 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थान :** सरस्वती शिशु मंदिर, देवीगंज रोड, **अम्बिकापुर** (छ.ग.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 15 मई दोपहर 12.00 बजे से 05 जून सुबह 8.00 बजे तक **स्थान :** सरस्वती शिशु विद्या मंदिर उ.मा. विद्यालय, पांडव नगर, **शहडोल** (म.प्र.) **शुल्क :** 1,000/-	**अवधि :** 08 मई दोपहर 12.00 बजे से 03 जून सुबह 9.00 बजे तक **स्थान :** डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन, रेशिमबाग, **नागपुर** (महाराष्ट्र) **शुल्क :** 1,000/-

छत्तीसगढ़ : महासमुंद में 1250 लोगों ने की घर वापसी

विश्व कल्याण महायज्ञ में प्रबल प्रताप जूदेव ने गंगाजल से पखारे सबके चरण

महासमुंद। इससे पहले छत्तीसगढ़ के पत्थलगाँव के खूँटापानी में 400 परिवार के 1200 लोगों को हिंदू धर्म में वापसी की थी। इन लोगों ने बताया था कि मिशनरियों ने प्रलोभन देकर उनके पुरखों को धर्मांतरित किया था।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों से 1250 लोगों ने सनातन धर्म में वापसी की है। महासमुंद के कटांगपाली गाँव में मंगलवार (22 मार्च 2022) को आयोजित विश्व कल्याण महायज्ञ में इन लोगों ने घर वापसी की। महायज्ञ का आयोजन आर्य प्रतिनिधि समाज की ओर से किया गया था। श्री प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने ईसाई मिशनरियों के शिकार हुए इन लोगों के गंगा जल से चरण पखार कर मूल धर्म में वापसी करवाई। इस अवसर पर जूदेव ने कहा कि जब तक धर्मांतरण के शिकार हुए हर व्यक्ति की सनातन धर्म में वापसी नहीं होती है तब तक घर वापसी का अभियान लगातार चलता रहेगा। उन्होंने उपस्थित लोगों से हिंदुओं का जबरन धर्मांतरण कराने वालों का विरोध करने की भी अपील की। इस कार्यक्रम में पूज्य संतों व मणमान्य नागरिकों की उपस्थिति थी।

ज्ञात हो कि इससे पहले छत्तीसगढ़ के पत्थलगाँव के खूँटापानी में 400 परिवार के 1200 लोगों को हिंदू धर्म में वापसी की थी। प्रबल प्रताप सिंह ने उस कार्यक्रम का हिस्सा बनते हुए कहा था कि हिंदुत्व की रक्षा करना उनके जीवन का एकमात्र संकल्प है। उन्होंने बताया था कि घर वापसी करने वाले अधिकांश परिवार बसना सराईपाली के थे। हिंदू धर्म में लौटने वाले परिवारों ने बताया था कि करीब 3 पीढ़ी पहले उनके पूर्वजों का धर्मांतरण हुआ था। उस समय वे बहुत गरीब थे और मिशनरियों की ओर से कुछ आर्थिक मदद और बीमारियों में इलाज की सहायता मिलने का प्रलोभन मिलने के बाद धर्म परिवर्तन कर लिया था।

बता दें कि प्रबल प्रताप सिंह जूदेव के पिता दिलीप सिंह जूदेव अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में मंत्री थे। राज परिवार से जुड़े दिलीप सिंह जूदेव ने ही चरण पखारकर उन जनजाति समाज को मूल धर्म में वापसी करवाने का अभियान शुरू किया था, जो ईसाई मिशनरियों के झाँसे में आ कर धर्म परिवर्तन कर लेते थे। अगस्त 2013 में उनके निधन के बाद से इस 'घर वापसी अभियान' को उनके बेटे प्रबल प्रताप सिंह जूदेव आगे बढ़ा रहे हैं।

(संपादकीय पृष्ठ १ का शेष)

वादियों को दिखाने के लिए कश्मीर में शूटिंग करते जा रहे थे। कश्मीर की समस्या पर कुछ फिल्में बनीं थी, किन्तु कश्मीरी पंडितों के नरसंहार को छुपा दिया गया। 'द कश्मीर फाइल्स' की सफलता के कारण फिर से देश में जनमत 3/4 व 1/4 में विभाजित हुआ। देश के बहुसंख्य समाज की संवेदना कश्मीरी पंडितों के साथ है, जिन्हें पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने खदेड़ दिया। इसमें भी कुछ अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडितों के साथ सहानुभूति नहीं रखते वो तो समझा जा सकता है किन्तु वे 5 प्रतिशत हिन्दू लिबरल्स, इनकी क्या समस्या है? क्या कारण है जो सदैव इतिहास के गलत पक्ष के साथ खड़े रहते हैं?

वर्ष प्रतिपदा

भारतीय कालगणना के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपदा से नव संवत्सर का आरंभ होता है। इसी तिथि को वर्ष प्रतिपदा कहते हैं, भारत वर्ष में युधिष्ठिर संवत, विक्रम संवत, शालिवाहन शक संवत आदि का प्रारंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है। शासकीय दृष्टि से शक संवत को मान्यता है, परन्तु जन जीवन में विक्रम संवत को प्रमुखता दी गई है। ऋतुओं के पूरे एक चक्र को संवत्सर कहते हैं –

चैत्रे मासे जगद ब्रह्म ससर्ज प्रथमे अहीन।
शुक्ल पक्षे समग्रेतु तदा सूर्योदय सति॥

ब्रह्मपुराण में वर्णित इस श्लोक के अनुसार चैत्र मास के प्रथम सूर्योदय पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इस तिथि के कई ऐतिहासिक महत्व भी हैं। इस वर्ष से 1 अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 122 वर्ष पहले वर्ष प्रतिपदा के दिन ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का सृजन किया था। **इसी दिन** –

- सम्राट विक्रमादित्य ने विक्रम संवत प्रारंभ किया।
- शालिवाहन ने शालिवाहन संवत्सर प्रारंभ किया।
- स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की।
- सिंध प्रांत के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरुणावतार संत झूलेलाल प्रगट हुए।
- युधिष्ठिर राज्याभिषेक के अवसर पर, युगाब्द संवत्सर प्रारंभ हुआ।
- प्रभु श्रीराम का राज्याभिषेक इसी अवसर पर हुआ।

देश की एकता, अखण्डता एवं एकात्मता के संरक्षण के लिये सक्रिय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव हेडगेवार का जन्म भी इसी दिन हुआ। शालिवाहन नामक कुम्हार के लड़के ने मिट्टी के सैनिकों की सेना बनाई। वास्तव में बिल्कुल चैतन्यहीन, पौरुषहीन, पराक्रमहीन बने समाज में चैतन्य भर दिया था, जिससे विजयी हुए। सोते हुए समाज के कानों में सांस्कृतिक शंख ध्वनि फूंकने की और मृत मानव के शरीर में जीवन संचार करने के लिये आज भी ऐसे शालिवाहनों की आवश्यकता है। समुद्र लांघने के समय सिर पर हाथ रखकर बैठे हनुमान को आवश्यकता है, पीठ पर हाथ रखकर विश्वास देने वाले जामवंत की। शस्त्र त्याग कर बैठे अर्जुन को आवश्यकता है, उत्साह प्रेरक मार्गदर्शक कृष्ण की संस्कृति के सपूत और गीता के युवकों का सत्कार करने के लिये आज का समाज भी तैयार है। आज के दिन पुरुषार्थी, पराक्रमी, सांस्कृतिक वीर बनने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये महाराष्ट्र में वर्ष के प्रथम दिन को गुड़ी पाड़वा कहा जाता है। गुड़ी मानव देह का प्रतीक माना जाता है, गुड़ी यानि विजय पताका। भोग पर योग की विजय। वैभव पर विभूति की विजय और विकास पर विचार की विजय। मंगलता और पवित्रता के वातावरण में सतत प्रसारित करने वाली इस गुड़ी को फहराने वाले को आत्मनिरीक्षण करके यह देखना चाहिये कि मेरा मन शांत, स्थिर और सात्विक बना या नहीं।

सम्राट विक्रमादित्य ने शकों पर विजय के पश्चात् विक्रम संवत शुरु किया था। शास्त्र के अनुसार संवत प्रारंभ करने से पूर्व सम्राट का यह दायित्व होता था कि उसके राज्य में कोई दुखी-दीन न हो। कोई कर्जदार न हो। राजा सबके कर्ज चुका दे, सबके दु:ख दूर कर दे। वही राजा अपने नाम से संवत शुरु कर सकता है। सम्राट वीर विक्रमादित्य ने भी न्याय और वीरता का मानदण्ड स्थापित किया था।

कैसे मनाएं यह नव संवत्सर महोत्सव –

- इस दिन प्रथम नवरात्र भी होता है, अत: उपवास रखें।
- स्नान के पश्चात् घर के सभी सदस्य मिलकर यज्ञ करें, नए वर्ष के लिए किसी आदत को छोड़ने की तथा किसी नयी अच्छी आदत को सीखने का संकल्प करें।
- किसी मंदिर में परिवार सहित जाकर पूजन करना चाहिए।
- कथा कीर्तन का आयोजन हो सकता है।
- सम्राट विक्रमादित्य, अन्य महापुरुषों की कथाएं सुनाई जा सकती हैं। इसी दिन संत झूलेलाल व गौतम जयंती भी होती है।

मध्यप्रदेश के दिव्यांग चित्रकार से मिले प्रधानमंत्री, ट्विटर पर किया फालो

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट में लिखा आयुष कुंडल से प्रेरणा मिलती रहे इसलिए किया फालो

खरगोन। जन्मजात दिव्यांगता होते हुए भी प्रकृति से मिली शक्ति ने मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के बड़वाह निवासी आयुष कुंडल का बुधवार, 23 मार्च को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलने का सपना पूरा कर दिया। रीड की हड्डी में समस्या के चलते 25 वर्षीय आयुष न तो बोल पाते हैं और न ही ठीक से बैठ पाते हैं। इसके बाद भी अपने पैरों से सुन्दर चित्र बनाते हैं। मिलने के अवसर पर आयुष ने मोदी को अपने पैरों से बनाए चित्र भेंट किए। इनमें पीएम के पांच और स्वामी विवेकानंद का एक चित्र था। मोदी ने आयुष को ट्विटर पर फालो भी कर लिया है।

उन्होंने ट्विटर पर लिखा कि आयुष से मिलना मेरे लिए एक अविस्मरणीय क्षण बन गया। उसने जिस प्रकार से पेंटिंग में महारत हासिल की है और अपनी भावनाओं को पैर की अंगुलियों से आकार दिया, वह हर किसी को प्रेरित करने वाला है। अनवरत प्रेरणा मिलती रहे। इसलिए मैं उन्हें ट्विटर पर फालो कर रहा हूं।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री से मिलने के अवसर के समय आयुष के साथ उनकी माता सरोज कुंडल, मामा संजय शर्मा और खड़वा के भाजपा सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल उपस्थित थे।

पैर से बनाओ नक्शा तो उपहार में दूंगा मकान

संजय ने बताया कि जब आयुष के स्वयं के मकान के सपने के विषय में प्रधानमंत्री को बताया गया तो उन्होंने उससे कहा कि, पैरों से सपनों के घर का नक्शा बनाओ तो हम तुम्हें यह उपहार में देंगे।

अब तक 600 से अधिक चित्र बनाए

सरोज ने बताया कि आयुष ने सात वर्ष की उम्र से ही पेंटिंग बनाना शुरू कर दिया था। वह अब तक 600 से ज्यादा चित्र बना चुके हैं। उसने मूक बधिर स्कूल से आठवीं कक्षा तक पढ़ाई भी की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार, 23 मार्च को नई दिल्ली में मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के दिव्यांग आर्टिस्ट आयुष कुंडल से भेट करके उनकी इच्छा को पूरा कर दिया। इस अवसर पर आयुष ने पैरों की अंगुलियों से तैयार स्वामी विवेकानंद की पेंटिंग उन्हें भेंट की। अपनी दिव्यांगता के बाद भी आयुष ने कभी आत्मविश्वास को टूटने नहीं दिया और पैरों से अपनी कला प्रतिभा को जीवंत बनाए रखा।

आयुष को यह है गंभीर बीमारी

आयुष मस्तिष्क पक्षाघात (सेरेब्रल पाल्सी) से पीड़ित है। इसमें व्यक्ति की संतुलन बनाने की क्षमता प्रभावित हो जाती है। रीढ़ की हड्डी सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। सेरेब्रल पाल्सी की ही जैसी एक और बीमारी होती है एमियोट्रोफिक लैटरल स्लेरोसिस (एएलएस)। दुनिया को ब्लैक होल व बिग बैंग थ्योरी समझाने वाले वैज्ञानिक स्टीफन हार्किंग एएलएस से ही पीड़ित थे। यह बीमारी नर्वस सिस्टम से जुड़ी होती है। इसमें व्यक्ति की मांसपेशियां धीरे-धीरे कमजोर होती है और फिर निष्क्रिय हो जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी आसन

मन को ठीक करने के लिए यौगिक क्रियाएं जैसे पद्मासन, वज्रासन, शीर्षासन, सर्वांगासन, हलासन, भुजंगासन, जानुशिरासन, त्रिकोणासन तथा उष्ट्रासन आदि उपयोगी हैं। इसके अलावा नाड़ी शोधन, उज्जायी प्राणायाम एवं ध्यान का नियमित अभ्यास तन व मन दोनों के लिए उपयोगी है। योग का नियमित अभ्यास स्मरणशक्ति को बढ़ाता है। स्मरण शक्ति क्षमता ठीक रखता है। साथ ही रक्त संचालन व पाचन क्षमता में वृद्धि, नसों व मांसपेशियों में पर्याप्त खिंचाव उत्पन्न करने के अतिरिक्त योग से मस्तिष्क को शुद्ध रक्त मिलता है। इसके लिए विशेष रूप से सूर्य नमस्कार, शीर्षासन, पश्मिोत्तानासन, उष्ट्रासन व अर्धमत्स्येन्द्र आसन आदि करने चाहिए।

योगनिद्रा : यह मानसिक तनाव और भावनात्मक असंतुलन को दूर करने में सहायक है। योगनिद्रा व शिथलीकरण के प्रतिदिन 10 मिनट के अभ्यास से रोजमर्रा के तनाव चेतन तथा अवचेतन मन से हट जाते हैं।

सर्वांगासन : पीठ के बल जमीन पर लेट जाएं। दोनों पैरों को जमीन से ऊपर उठा कर हल्के से नितम्ब को भी जमीन से ऊपर उठाएं। कमर पर हाथों का सहारा देते हुए गर्दन के नीचे का सारा भाग जमीन से ऊपर उठा कर एक सीधी रेखा में करें। अंतिम स्थिति में पूरा शरीर गर्दन से 90 डिग्री पर ऊपर उठता है। सर्वांगासन की इस स्थिति में कुछ क्षण समय तक रुकें। इसके बाद वापस पूर्व स्थिति में आएं। स्मरण शक्ति को कमजोर होने से रोकने, उसे बढ़ाने व मस्तिष्क तक शुद्ध रक्त व ऑक्सीजन का संचार करने में इसकी भूमिका अहम है।

इस माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

मूंग :

- इस समय मूंग की फसल में 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- मूंग की फलियां यदि हल्के भूरे रंग की हो गयी हैं तो समझें की फसल पक कर तैयार है।

गेहूँ :

- अनाज के भण्डारण से पहले गेहूँ को अच्छी तरह सुखा लें जिससे उसमें नमी बाकी ना रहे।

सब्जियाँ :

- भिण्डी व टमाटर की फसल को छेदक सूंडी के प्रकोप से बचाने के लिए 0.1 प्रतिशत टोपास या कैलिक्सिन (400-500 मि.लि./1000 लिटर पानी के हिसाब से) का छिड़काव खड़ी फसल में कर दें।
- फल मक्खी के नियंत्रण के लिए मिथाइल यूजिनोल के फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग करें।

कद्दू वर्गीय फसलें :

- कद्दू वर्गीय फसलों में कीट नियंत्रण के लिए यलो स्टिकी ट्रैप, 20 से 25 प्रति हैक्टेयर के हिसाब से लगाएँ ।
- कद्दू एवं चप्पन कद्दू में फल आने पर 1 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- खरपतवार से बचाव के लिए निराई गुड़ाई करें।
- तापमान बढ़ने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- यदि बेल बढ़ गयी है तो सहारा लगा दें एवं मचान बना दें।

फल वाली फसलें :

- आम के पेड़ों में इस समय फल गिरने लगता है। इसके बचाव के लिए 20 पी.पी.एम. की दर से नैफथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- आम, अंगूर व अमरूद के बाग में जिंक, कॉपर, मैंगनीज, लोहा व बोरॉन के सूक्ष्म पोषक तत्वों का स्प्रे करें।
- यदि पेड़ों पर दीमक का प्रकोप दिखाई देता है तो 0.2 प्रतिशत क्लोरोपायरीफॉस का छिड़काव कर दें।

दो वर्ष पश्चात् नवरात्रि का पर्व फिर धूमधाम से

रायपुर। शक्ति की उपासना नवरात्रि का पर्व 2 अप्रैल से प्रारंभ होने वाला हैं। कोरोना के चलते दो वर्ष पश्चात् भक्ति और उत्सव का वातावरण बना है। घरों से लेकर देवी मंदिरों तक नवरात्रि पर्व की तैयारियां चल रही है। दीप कलश सजाएं जा रहे है। वहीं मन्दिर स्थानों में मनोकामना ज्योति कलश का पंजीयन चल रहा है। ज्योति कलश के लिए शहर के प्रमुख महामाया मंदिर में 7000 और बंजारी धाम में 5000 श्रद्धालुओं ने पंजीयन करा लिया है।

नवरात्रि में जसगीतों की धूम रहेगी

नवरात्रि पर्व के नौ दिनों तक शहर में जगराता और जसगीतों की धूम रहेगी। ऐसा उत्साह का वातावरण गत दो वर्ष पश्चात् इस नवरात्रि में लोगों के बीच देखने को मिल रहा है। लोग घर-घर पूजा घरों को सजाने के साथ ही पूजन सामग्री आदि खरीदी कर रहे हैं।

ऐसा ही वातावरण प्रदेश के अन्य कई स्थानों पर देखने को मिल रहा हैं। लोग इस नवरात्रि पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी में लगे हैं।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव पर भगवान की वेशभूषा में नन्हें बच्चे

रायपुर। प्रदेश की राजधानी में बुधवार, 30 मार्च को भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव निमित्त प्रभातफेरी निकली। इस प्रभातफेरी में नन्हें बच्चे भगवान की वेशभूषा धारण कर चल रहे थे, जो रास्ते में देखने वालों का आकर्षण का केन्द्र था। इन बच्चों को जनता कौतूहल से निहार रही थी। जैन समाज ने बताया कि, इस महोत्सव पर प्रतिदिन और 13 दिन तक शहर के अलग अलग स्थानों पर प्रभातफेरी निकलेगी।

बचपन से पारंपरिक व धार्मिक संस्कार बच्चों को मिलते है तो वह संस्कार जीवन भर साथ रहते है। सनातन संस्कृति के लिए यह आवश्यक भी है।

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

सामाजिक समरसता गतिविधि के आयोजन

सामाजिक समरसता गतिविधि के अखिल भारतीय संयोजक श्री श्याम प्रसाद के छत्तीसगढ़ प्रवास पर विभिन्न स्थानों पर सामाजिक समरसता के आयोजन संपन्न हुए। इस आयोजन में सामाजिक समरसता के प्रांत संयोजक विश्वनाथ बोगी भी थे।

आर.एन.आई. पंजी. क्र.- ६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०२१-२३

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

डॉ. हेडगेवार जयंती
चैत्र शु.०१, ०२ अप्रैल

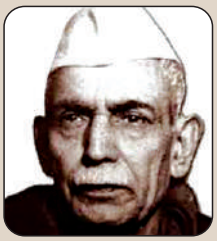

पं. माखनलाल चतुर्वेदी
जयंती ०४ अप्रैल

जगजीवन राम
जयंती ०५ अप्रैल

मंगल पांडे
बलिदान दिवस ०८ अप्रैल

ले. कर्नल धनसिंह थापा
जयंती १० अप्रैल

महात्मा ज्योतिबा फुले
जयंती ११ अप्रैल

राणा सांगा
जयंती १२ अप्रैल

डॉ. भीमराव आम्बेडकर
जयंती १४ अप्रैल

तात्या टोपे
बलिदान दिवस १८ अप्रैल

दामोदर गणेश बापट
जयंती २९ अप्रैल

''जनसंख्या असंतुलन, चुनौतियाँ एवं हमारी भूमिका'' विषय पर
धर्म रक्षा न्यास, रायपुर द्वारा आयोजित गोष्ठी - 27 मार्च 2022

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन- ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - अप्रैल २०२२

प्रति,
.....
.....
.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर (छ.ग.) 492001 द्वारा
गुप्ता ऑफसेट समता कालोनी, रायपुर से छपवाकर गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट